कनकधारा स्‍ तोत्र म   (Kanakadhara Stotram in hindi)

अङ्‍ गम हरेः पुलकभूषणमाश्र यन्‍ ती,
भृङ्‍ गाङ्‍ गगनेव मुकुलाभरणं तमालम्‍ ।
अङ्‍ गीकृता ि खल ि वभू ि तरपाङ्‍ गली ला,
मांगल्‍ यदास्‍ तु मम मंगलदेवतायाः ।।१।।

मुग्‍ धा मुहु ि र्व   दधती वडने मुरारेः,
प्र मत्र पाप्र ि णि ि हता ि न गतागता ि न।
माला द्द शोर्म   धुकरी व महोत्‍ पले या,
सा मे   ि श्र यं ि दशतु सागरसम्‍ भवायाः ।।२।।

ि वश्‍ वामरेन्‍ द्र पद ि वभ्र मदानदक्ष म्‍
आनन्‍ दहेतुर ि धकं मुर ि वद्‍ ि वषोऽ ि प।
ईषन्ि नषीदतु म ि य क्ष णमीक्ष णार्ध   म्‍,
इन्‍ दी वरोदरसहोदर ि मन्ि दरायाः ।।३।।

आमी ि लताक्ष म ि धगम्‍ य मुदा मुकुन्‍ दम-
आनदकंदम ि नमेषमनङ्‍ ग-तन्‍ त्र म ।
आकेकरस्ि थतकनी ि न-कपक्ष्‍ मनेत्र ,
भूत्‍ यै भवेन्‍ मम भुजङ्‍ गशयाङ्‍ गनायाः ।।४।।

बाह्‍ वन्‍ तरे मधुजितः ि श्र तकौस्‍ तुभे या,
हारावली व ह ि रनीलमयी ि वभा ि त।
कामप्र दा भगवतोऽ ि प कटाक्ष माला,
कल्‍ याणमावहतु मे कमलालयायाः ।।५।।

कालाम्‍ बुदा ि लल ि लतोर ि स कैटभारेर-
धाराधरे स्‍ फुर ि त या त ि डदङ्‍ गनेव।
मातुः समस्‍ तजगतां महनीयमू ि र्त   र-
भद्र ा ि ण मे   ि दशतु भार्ग   वनन्‍ दनायाः ।।६।।

प्र ाप्‍ तं पदं प्र थमतः ि कल यत्‍ प्र भावान्‌,
मांगल्‍ यभाजि मधुमा ि थ ि न मन्‍ मथेन।
मय्‍ यापतेत्त ि दह मन्‍ थरमीक्ष णार्धं
मन्‍ दालसं च मकरालयकन्‍ यकायाः ||७||

दद्‍ याद्‍ दयानुपवनो द्र ि वणाम्‍ बुधाराम
अस्ि मन्‍ न ि कंचन ि वहङ्‍ ग ि शशौ   ि वषण्‍ णे |
दुष्‍ कर्म   घर्म   मपनीय ि चराय दूरं
नरायणप्र ण ि यनीनयनाम्‍ बुवाहः ||८||

इष्‍ टा ि व ि शष्‍ ट्‍ मतयोऽ ि प यया दर्या   द्र -
द्द ष्‍ ट्‍ या ि त्र ि वष्‍ टपपदं सुलभं लभन्‍ ते |
द्द ष्ि टः प्र हृ ष्‍ टकमलोदरदी प्ि त ि रष्‍ टां
पुष्ि टं कृषीष्‍ ट मम पुष्‍ कर ि वष्‍ टरायाः ||९||

गीर्दे   वते ि त गरु णध्‍ वजसुन्‍ दरी ि त
शाकम्‍ भरी ि त श ि शशेखरवल्‍ ल भे ि त।
  सृष्ि टस्ि थ ि तप्र लयके ि लषु संस्ि थतायै
तस्‍ मै नमस्ि त्र भुवनैकगुरोस्‍ तरु ण यै।।१०।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्टयै नमोऽस्तु पुरषोत्तमवललभाय।।११।।

नमोऽस्तु नालिकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवाल्लभायै।।१२।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरूहाक्षि।
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।१३।।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्नोती वचनाङ्गमानसैस
त्वां मुरारीहृदयेश्वरीम भजे।।१४।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्येशोभे।
भगवती हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद महयं।।१५।।

दिघस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट -
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलाप्लुताङ्गीम।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष -
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम।।१६।।

कमल कमलाक्षवल्लभे
त्वं करुणापुरतरङ्गितैरपाङ्गै।
अवलोकय मामकिंचनानाम
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।।१७।।

स्तुवन्ति ये स्तुतीभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरम रमाम।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।१८।।